



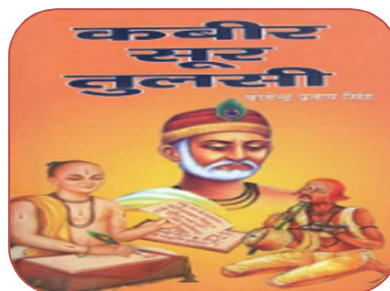
कबीर, तुलसी और सूर में लोक और शास्त्र का संवाद

Vishwanath S/o Mansing Rathod
Research Scholar

Dr. Vidya Sagar Singh
Guide
Professor, Chaudhary Charansingh University Meerut.

गोषवारा

भारत के भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत कवियों में कबीर, तुलसीदास और सूरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। इन संतों ने धार्मिक शास्त्रों के ज्ञान को आम जनता तक पहुँचाने के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से लोक और शास्त्र के बीच एक संवाद स्थापित किया। उनके काव्य में लोकधर्म विचार और शास्त्रसम्मत तत्वों का मिश्रण है, जो एक तरफ धार्मिक शास्त्रों की विद्वत्ता और दूसरी तरफ जनसाधारण के सरल और सीधे अनुभव को जोड़ता है। कबीर दास ने भक्ति की राह पर चलते हुए शास्त्रों और तात्त्विक ज्ञान को लोक जीवन से जोड़ने की कोशिश की। उन्होंने शास्त्रों की आलोचना की, लेकिन साथ ही जीवन की गहरी समझ को भी प्रस्तुत किया। कबीर के भजनों में लोकभाषा का प्रयोग किया गया, और उनकी शिक्षा का उद्देश्य था कि व्यक्ति को शास्त्रों में न बंधकर अपने भीतर के सत्य का अनुभव करना चाहिए। भारत के भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत कवियों में कबीर, तुलसीदास और सूरदास का महत्वपूर्ण स्थान है। इन संतों ने धार्मिक शास्त्रों के ज्ञान को आम जनता तक पहुँचाने के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से लोक और शास्त्र के बीच एक संवाद स्थापित किया। उनके काव्य में लोकधर्म विचार और शास्त्रसम्मत तत्वों का मिश्रण है, जो एक तरफ धार्मिक शास्त्रों की विद्वत्ता और दूसरी तरफ जनसाधारण के सरल और सीधे अनुभव को जोड़ता है। कबीर दास ने भक्ति की राह पर चलते हुए शास्त्रों और तात्त्विक ज्ञान को लोक जीवन से जोड़ने की कोशिश की। उन्होंने शास्त्रों की आलोचना की, लेकिन साथ ही जीवन की गहरी समझ को भी प्रस्तुत किया। कबीर के भजनों में लोकभाषा का प्रयोग किया गया, और उनकी शिक्षा का उद्देश्य था कि व्यक्ति को शास्त्रों में न बंधकर अपने भीतर के सत्य का अनुभव करना चाहिए।



कबीर, तुलसी और सूर के काव्य में लोकधर्मिता और शास्त्रधर्मिता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। इन संतों ने शास्त्रों की गूढ़ता और लोक जीवन के अनुभव को एक दूसरे से जोड़ने का कार्य किया। इनकी रचनाओं में लोकविधान और धार्मिक शास्त्रों के सिद्धांतों का सरल, परंतु गहरी अर्थवत्ता के साथ प्रस्तुत किया गया है, जो आज भी जनमानस में जीवित हैं। इनका काव्य न केवल भक्ति और जीवन के दर्शन को सरल और जनप्रिय रूप में प्रस्तुत करता है, बल्कि यह लोक और शास्त्र के बीच का एक सेतु बनता है। कबीर, तुलसी और सूर ने अपने काव्य के माध्यम से लोक और शास्त्र का संवाद स्थापित किया। उनकी रचनाओं में हम देख सकते हैं कि उन्होंने शास्त्र के तत्वों को लोक जीवन के साथ जोड़ते हुए जनमानस के दिलों में आध्यात्मिकता और धार्मिकता का बीज बोया। उनके काव्य में शास्त्र के गूढ़सिद्धांतों को लोक भाषा में अनुवादित किया गया, ताकि आम जनता को वह सुलभ और समझने योग्य हो सके।

परिचय:

भारत के भक्ति आंदोलन में संतों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। इनमें से कबीर, तुलसीदास और सूरदास ऐसे संत कवि थे जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से लोक और शास्त्र के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित किया। इन तीनों कवियों का काव्य शास्त्र के गूढ़ ज्ञान को आम जनता तक पहुँचाने के साथ-साथ लोक जीवन के अनुभवों को धार्मिकता के संदर्भ में प्रस्तुत करता है।

1. कबीर - शास्त्रों की आलोचना और लोकधर्मिता:

कबीर ने भक्ति और धर्म को लोक जीवन से जोड़ते हुए शास्त्रों की आलोचना की। उनका काव्य धर्म के पारंपरिक ढाँचों और शास्त्रों की कड़ी निंदा करता था क्योंकि वे मानते थे कि धार्मिकता का वास्तविक रूप व्यक्ति के अंतरात्मा में होता है न कि शास्त्रों में। कबीर का ध्यान केवल धार्मिक आचार-प्रवृत्तियों और कर्मकांडों से नहीं था, बल्कि उन्होंने एकात्मता, प्रेम और मानवता को अधिक महत्वपूर्ण माना। उनका काव्य शास्त्र के भीतर की गूढ़ता को साधारण भाषा में प्रस्तुत करता है, जिससे लोक समुदाय आसानी से समझ सके।

2. तुलसीदास - शास्त्रों के सिद्धांतों को लोक जीवन में समाहित करना:

तुलसीदास ने रामचरितमानस के माध्यम से लोक और शास्त्र के बीच संवाद स्थापित किया। तुलसीदास एक ऐसे कवि थे जिन्होंने शास्त्रों की गूढ़ता को सरलता से प्रस्तुत किया। उनका उद्देश्य था कि राम के आदर्शों को शास्त्रों की सैद्धांतिकता से लोक जीवन में उतारा जाए। उन्होंने शास्त्रों का सटीक उपयोग किया, लेकिन इसे लोक के समझने योग्य रूप में प्रस्तुत किया। राम की कथा को रामकथा के रूप में प्रस्तुत करते हुए उन्होंने शास्त्रों के सत्य को जनता तक पहुँचाया।

3. सूरदास - लोकगीतों के माध्यम से शास्त्रों का लोक में रूपांतरण:

सूरदास ने भगवान कृष्ण की प्रेम कथा को लोक गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया। वे शास्त्रों की गूढ़ बातें और भगवान श्री कृष्ण के अवतार को बहुत सरल और लोक प्रिय रूप में चित्रित करते थे। सूरदास ने भगवान के प्रेम को आम जनता तक पहुँचाया और भक्ति के उच्चतम सिद्धांतों को लोक जीवन से जोड़ते हुए भगवान के आदर्शों को प्रस्तुत किया। उनका काव्य सरल था, लेकिन उसमें शास्त्रों का गूढ़ अर्थ और कृष्ण के जीवन के दर्शन समाहित थे।

4. लोक और शास्त्र का संवाद:

कबीर, तुलसी और सूर ने अपने काव्य के माध्यम से लोकधर्मिता और शास्त्रधर्मिता के बीच सामंजस्य स्थापित किया। इन संतों ने धार्मिक शास्त्रों के गूढ़ तत्वों को लोक जीवन के अनुभवों और प्रवृत्तियों के साथ जोड़ा। वे यह मानते थे कि भक्ति और धर्म के वास्तविक अर्थ शास्त्रों की विद्वता में नहीं, बल्कि जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों में छिपे होते हैं। इन संतों ने अपनी रचनाओं में लोक भाषा का प्रयोग करते हुए शास्त्रों के सिद्धांतों को सुलभ, साधारण और आम जनता के लिए समझने योग्य बनाया। उन्होंने शास्त्रों के साथ-साथ लोकधर्मी भावनाओं का भी सम्मान किया और उनके माध्यम से समाज में आध्यात्मिक जागरूकता फैलाने का कार्य किया।

कबीर, तुलसी और सूर ने लोक और शास्त्र के बीच संवाद स्थापित किया, जिससे उनकी रचनाएँ धर्म, भक्ति और आध्यात्मिकता के दृष्टिकोण से समृद्ध हो गईं। इन संत कवियों ने लोक भाषा का सरलता से उपयोग किया और शास्त्रों के गूढ़ सिद्धांतों को लोक जीवन के अनुभवों से जोड़कर समाज में भक्ति की नई लहर उठाई। उनके काव्य में एक अद्भुत सामंजस्य है, जो आज भी हमारे जीवन में मार्गदर्शन का कार्य करता है।

उद्देश्य

1. लोक और शास्त्र के संबंध को समझना इस विषय का प्रमुख उद्देश्य यह है कि हम यह समझ सकें कि कबीर, तुलसीदास और सूरदास ने किस प्रकार शास्त्रों के गूढ़ धार्मिक, आध्यात्मिक और नैतिक विचारों को लोकभाषा और लोकजीवन के माध्यम से जनता तक पहुँचाया।
2. शास्त्रों के ज्ञान का लोक में सरलीकरण तीनों संतों ने शास्त्रों में वर्णित गूढ़ तत्त्वज्ञान, ईश्वर भक्ति, नैतिकता, मोक्ष, प्रेम आदि विषयों को सरल, सुगम और जनमानस के अनुकूल रूप में प्रस्तुत किया। इस विषय के अध्ययन से यह जानने का प्रयास होता है कि उन्होंने कैसे शास्त्र को लोक के अनुकूल बनाया।
3. सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों की पहचान करना कबीर, तुलसी और सूर ने अपने समय के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में रहते हुए शास्त्र और लोक के बीच संतुलन बनाया। इस विषय के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि उनके साहित्य में कैसे समाज सुधार, धार्मिक सहिष्णुता और मानवतावाद के संदेश छिपे हैं।
4. भक्ति आंदोलन की भूमिका को रेखांकित करना भक्ति युग के कवियों ने धर्म को कर्मकांड और पाखंड से हटाकर प्रेम, भक्ति और सेवा से जोड़ा। इस विषय के अंतर्गत हम यह उद्देश्य रखते हैं कि भक्ति कालीन काव्य में कैसे लोक और शास्त्र का समन्वय भक्ति आंदोलन को एक नई दिशा देता है।
5. भाषा और शैली की सराहना करना तीनों कवियों ने भाषा और शैली के स्तर पर शास्त्र को लोक जीवन से जोड़ा। उनका काव्य ब्रजभाषा, अवधी, और साधु भाषा में होने के कारण सहज रूप से लोगों तक पहुँचा। यह विषय हमें यह जानने का अवसर देता है कि किस प्रकार भाषा ने लोक-शास्त्र संवाद को संभव बनाया।

साहित्यिक समीक्षा:

भारतीय भक्ति साहित्य में कबीर, तुलसीदास और सूरदास की रचनाएँ अद्वितीय स्थान रखती हैं। इन्होंने धार्मिक शास्त्रों की गूढ़ता को लोक की भाषा, संवेदना और जीवन-व्यवहार से जोड़कर ऐसा साहित्य रचा जो आज भी समाज में गूंजता है। इन तीनों कवियों के काव्य में लोक और शास्त्र के बीच एक गहरा संवाद देखने को मिलता है- जहाँ एक ओर शास्त्र की गंभीरता है, वहीं दूसरी ओर लोक की सहजता, अनुभूति और व्यावहारिकता है।

1. कबीर: शास्त्र की आलोचना, लोक की पक्षधरता

साहित्यिक दृष्टि से, कबीर की वाणी में शास्त्रों के बाह्य रूपों की तीव्र आलोचना है, लेकिन भीतर एक तात्त्विक दृष्टि है जो शास्त्र के मूल तत्वों से गहरे जुड़ी है। कबीर ने साखियों और पदों के माध्यम से ज्ञान, भक्ति, प्रेम और सत्य की तलाश को आमजन के लिए सुलभ बनाया। उन्होंने वेद, पुराण, कुरान, ग्रंथ सबकी सीमाओं को चुनौती दी और 'अनुभव' को सबसे बड़ा शास्त्र माना।

2. तुलसीदास: शास्त्र का लोक में अवतरण

तुलसीदास ने रामकथा को संस्कृत से निकालकर अवधी जैसी लोकभाषा में ढाला। उन्होंने रामचरितमानस में वेदों, उपनिषदों और पुराणों की मूल आत्मा को भक्ति, मर्यादा, धर्म और आदर्शों के रूप में लोक जीवन में प्रवाहित किया। तुलसी का साहित्य शास्त्र का लोक रूपांतरण है, जिसमें राम लोकनायक हैं और भक्ति लोकमार्ग है।

3. सूरदास: शास्त्रीय भावों का लोक गायन

सूरदास ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं, गोपियों के प्रेम, और भक्ति के रसानुभव को ब्रजभाषा में गाकर उस शास्त्रीय भक्ति को लोक उत्सव बना दिया। सूर के पदों में विष्णु पुराण, भागवत, नारद भक्ति सूत्र आदि शास्त्रों के भाव भरे हैं, परंतु उन्हें उन्होंने ऐसी सहजता और माधुर्य के साथ प्रस्तुत किया कि वह लोकगीत बन गए।

समस्या का विवरण:

भक्ति काल के प्रमुख कवि कबीर, तुलसीदास और सूरदास ने भारतीय साहित्य, धर्म, समाज और संस्कृति को जो दिशा दी, वह आज भी प्रासंगिक है। इन तीनों संत-कवियों के काव्य में शास्त्रीय ज्ञान और लोक संवेदना के बीच एक सुंदर और सार्थक संवाद दिखाई देता है। इस संवाद का अध्ययन करना कई दृष्टियों से आवश्यक है।

1. भक्ति साहित्य को गहराई से समझने के लिए

कबीर, तुलसी और सूर की रचनाएँ भक्ति आंदोलन का प्रतिनिधित्व करती हैं। इनकी रचनाओं में शास्त्रों के मूल तत्व और लोक के जीवनानुभवों का संगम है। इनकी तुलना और विश्लेषण से भक्ति युग की विचारधारा, शैली और आध्यात्मिकता का समग्र चित्र स्पष्ट होता है।

2. शास्त्रों की लोकप्रसार में भूमिका जानने हेतु

इन कवियों ने शास्त्रों को जनसामान्य की भाषा और अनुभवों से जोड़ा। अध्ययन करने से यह समझा जा सकता है कि धार्मिक ज्ञान और दर्शन, कैसे लोकभाषा और संस्कृति के माध्यम से प्रभावी ढंग से समाज में प्रसारित किया गया।

3. लोकभाषा और साहित्यिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन करने हेतु

इन कवियों ने अपनी-अपनी लोकभाषाओं कबीर ने साधु भाषा, तुलसी ने अवधी, और सूरदास ने ब्रजभाषा में शास्त्रों की जटिल अवधारणाओं को सरल और सुलभ भाषा में प्रस्तुत किया। यह अध्ययन हमें भाषाई स्तर पर साहित्य के लोकतंत्रीकरण को समझने में सहायक होता है।

4. सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को जानने के लिए

तीनों कवियों की रचनाएँ समाज के धार्मिक भेदभाव, रूढ़ियों, जातिवाद, पाखंड आदि के विरुद्ध हैं। इस संवाद का अध्ययन हमें यह जानने में मदद करता है कि कैसे लोक चेतना और शास्त्र की अंतर्दृष्टि को एकत्र कर कवियों ने सामाजिकसुधार का मार्ग प्रशस्त किया।

5. समकालीन परिप्रेक्ष्य में मूल्य और प्रासंगिकता समझने हेतु

आज के दौर में जब धर्म और समाज के बीच द्वंद्व की स्थिति बनी हुई है, तब इन संतों की वाणी और उनके साहित्य में उपस्थित लोक-शास्त्र संवाद एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो समाज में सामंजस्य और सहिष्णुता को बढ़ावा दे सकता है।

परिकल्पना

परिकल्पना किसी शोध या अध्ययन का वह बिंदु होता है जिसके आधार पर हम यह अनुमान लगाते हैं कि अध्ययन से क्या निष्कर्ष प्राप्त हो सकते हैं। "कबीर, तुलसी और सूर में लोक और शास्त्र का संवाद" विषय के अंतर्गत निम्नलिखित परिकल्पनाएँ प्रस्तावित की जा सकती हैं:

1. लोकभाषा के माध्यम से शास्त्रों को जनसामान्य तक पहुँचाना संभव हुआ।

कबीर, तुलसी और सूर ने शास्त्रों की गूढ़ बातों को लोकभाषा (ब्रज, अवधी, साधु भाषा आदि) में इस प्रकार प्रस्तुत किया कि वह सहजता से जनता के हृदय तक पहुँची। इससे यह परिकल्पना बनती है कि लोकभाषा शास्त्रीय ज्ञान के प्रसार का प्रभावी माध्यम हो सकती है।

2. शास्त्र और लोक के बीच विरोध नहीं, संवाद संभव है।

तीनों कवियों ने यह स्थापित किया कि लोक जीवन और शास्त्रों के आदर्श विरोधी नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे को पूरक हैं। यह परिकल्पना समाज में व्याप्त धारणा को चुनौती देती है कि शास्त्र वल विद्वानों के लिए हैं और लोक केवल परंपराओं का अनुसरण करता है।

3. भक्ति आंदोलन ने लोक-शास्त्र संवाद को मजबूती दी।

यह परिकल्पना मानी जा सकती है कि कबीर, तुलसी और सूर के योगदान से भक्ति आंदोलन ने शास्त्रों को लोक जीवन में उतारने का कार्य किया और धर्म के मानवीय पक्ष को सामने लाया।

4. कबीर, तुलसी और सूर के साहित्य में सामाजिक सुधार की शक्ति निहित है।

तीनों कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से लोक को जागरूक किया और शास्त्रों की आड़ में हो रहे पाखंड, जातिवाद और रूढ़ियों का विरोध किया। अतः यह परिकल्पना की जा सकती है कि इनका काव्य सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी रहा है।

5. लोक और शास्त्र का यह संवाद आज भी प्रासंगिक है।

समकालीन सामाजिक और धार्मिक संघर्षों के संदर्भ में यह परिकल्पना की जा सकती है कि कबीर, तुलसी और सूर का लोक-शास्त्र संवाद आज भी सांप्रदायिक सद्भाव, सामाजिक न्याय और धार्मिक सहिष्णुता के लिए प्रेरणादायक सिद्ध हो सकता है।

परिणाम:

कबीर, तुलसीदास और सूरदास जैसे भक्ति युगीन कवियों ने अपने साहित्य में लोक और शास्त्र के बीच ऐसा गहरा संवाद स्थापित किया, जिसने न केवल तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को दिशा दी, बल्कि हिंदी साहित्य को भी समृद्ध किया। इस विषय के अध्ययन से जो मुख्य परिणाम सामने आते हैं, वे निम्नलिखित हैं:

1. शास्त्रों का मानवीकरण और लोक में रूपांतरण

इन तीनों कवियों ने शास्त्रों को केवल पुस्तक या पांडित्य तक सीमित न रखकर मानव जीवन के व्यावहारिक पक्षों से जोड़ दिया। तुलसी ने राम को लोकनायक बनाया, सूरदास ने कृष्ण को बाल-रूप में गाया, और कबीर ने निर्गुण ब्रह्म को भी लोक भाषा में पुकारा। इससे यह सिद्ध होता है कि शास्त्र केवल धर्मग्रंथ नहीं, जीवन जीने की विधा बन सकते हैं।

2. लोकभाषा में धर्म और दर्शन का प्रसार संभव हुआ

कबीर की साखियाँ, तुलसी का रामचरितमानस, और सूरदास के., इस बात के प्रमाण हैं कि ब्रज, अवधी, साधु भाषा जैसी लोकभाषाएँ भी गढ़ धार्मिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए पूर्णतः सक्षम हैं।

3. सामाजिक जागृति और सुधार की भूमिका

इन कवियों के काव्य में जातिवाद, पाखंड, आडंबर और रुढ़ियों के खिलाफ स्पष्ट विरोध है। यह स्पष्ट होता है कि इन कवियों का साहित्य केवल भक्ति तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और चेतना का माध्यम भी था।

4. लोक और शास्त्र के बीच सेतु निर्माण

कबीर ने जहाँ शास्त्र की रूढ़ व्याख्याओं पर प्रहार किया, वहीं तुलसी और सूर ने शास्त्रों के आदर्शों को लोक जीवन में प्रस्तुत किया। इस संवाद से यह परिणाम सामने आता है कि लोक और शास्त्र एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक बन सकते हैं।

5. आज के समाज में भी प्रासंगिकता

आज जब धार्मिक कट्टरता, सामाजिक विषमता और भाषाई विभाजन बढ़ रहे हैं, तब इन संतों की वाणी और उनका लोक-शास्त्र समन्वय हमें सांप्रदायिक सद्भाव, समरसता और सह-अस्तित्व की ओर प्रेरित करता है।

निष्कर्ष:

कबीर, तुलसीदास और सूरदास भारतीय भक्ति साहित्य के ऐसे स्तंभ हैं जिन्होंने शास्त्रों की गूढ़ता को लोक जीवन की सरलता से जोड़ा। इनके काव्य में जो लोक और शास्त्र के बीच संवाद दिखाई देता है, वह केवल साहित्यिक या धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. लोक और शास्त्र का समन्वय संभव है इन तीनों संत कवियों ने यह सिद्ध किया कि शास्त्रों के गहन तत्वों को लोक जीवन की भाषा, प्रतीकों और भावों के माध्यम से सहजता से अभिव्यक्त किया जा सकता है।
2. लोकभाषा बनी ज्ञान और भक्ति का प्रभावी माध्यम इन्होंने अपनी रचनाओं में संस्कृत जैसी जटिल भाषाओं के बजाय लोक भाषाओं अवधी (तुलसी), ब्रजभाषा (सूर), और साधु भाषा (कबीर) - का प्रयोग कर आमजन तक धर्म, दर्शन और भक्ति को पहुँचाया।
3. धार्मिकता में मानवीय मूल्यों का स्थान कबीर के निर्गुण भक्ति मार्ग में सत्य, प्रेम और अनुभव; तुलसी के रामराज्य में मर्यादा और नीति; और सूर के कृष्ण में वात्सल्य और प्रेम - इन सबमें शास्त्रों की आत्मा को लोक में आत्मसात किया गया।
4. सामाजिक सुधार की चेतना इन्होंने धार्मिक पाखंड, जातिवाद और बाह्याचारों का विरोध किया तथा सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक समानता का संदेश दिया।
5. आज भी प्रासंगिक इन संत कवियों के काव्य में जो लोक और शास्त्र का संवाद है, वह आज के समय में भी धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए उपयोगी है।

कबीर, तुलसी और सूरदास ने भारतीय समाज को यह दिखाया कि शास्त्र की गहराई और लोक की सरलता साथ-साथ चल सकती हैं। इनका काव्य धार्मिक आस्था और मानवता के बीच सेतु बनाता है, जहाँ भक्ति केवल ईश्वर की उपासना नहीं, बल्कि लोक जीवन का मार्गदर्शक बन जाती है। इनकी वाणी में शास्त्र की आत्मा और लोक की धड़कन एक साथ ध्वनित होती है - और यही इनके साहित्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ:

1. कबीर ग्रंथावली संपादक: डॉ. श्यामसुंदर दास (भारतीय विद्या संस्थान)
2. रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास :

3. सूरसागर सूरदास (रचनावली संस्करण, नागरी प्रचारिणी सभा)
4. हिंदी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचंद्र शुक्ल
5. भारतीय काव्यशास्त्र और भक्ति आंदोलन : डॉ. नामवर सिंह
6. लोक और शास्त्र : डॉ. केदारनाथ सिंह
7. कबीरः एक पुनर्पाठः डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल
7. कबीरः एक पुनर्पाठ - डॉ. पुरुषोत्तम अग्रवाल
8. तुलसीदास और भारतीय संस्कृति डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
9. सूरदास और उनका काव्य :डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी :अन्य सहायक ग्रंथ एवं लेखः
10. भारतीय दर्शन का इतिहास